राही

सुभद्रा कुमारी चौहान

'तेरा नाम क्या है?'
'राही|'
'तुझे किस अपराध में सजा हुई?'
'चोरी की थी, सरकार!'
'चोरी? क्या चुराया था?'
'नाज की गठरी|'
'कितना अनाज था?'
'होगा पांच-छह सेर|'
'और सजा कितने दिन की है?'
'साल भर की|'
'तो तूने चोरी क्यों की? मजदूरी करती तब भी तो दिन में तीन चार आने पैसे मिल जाते|'
'हमें मजदूरी नहीं मिलती, सरकार! हमारी जाति मांगरोरी है| हम केवल मांगते खाते हैं|'
'और भीख न मिले तो?'
'तो फिर चोरी करते हैं| उस दिन घरमें खाने को न था| बच्चे भूख से तड़प रहे थे, बाजार में बहुत देर तक माँगा| बोझा ढोने के लिए टोकना लेकर भी बैठी रही| पर कुछ न मिला| सामने किसी का बच्चा रो रहा था, उसे देखकर मुझे अपने भूखे बच्चों की याद आ गई| वहीँ पर किसी की नाज की गठरी राखी थी| उसे लेकर भागी ही थी कि पुलिस वाले ने पकड़ लिया|'
अनीता ने एक ठंडी साँस ली| बोली-'फिर तूने कहा नहीं कि बच्चे भूखे थे, इसलिए चोरी की| संभव है इस बात से मजिस्ट्रेट कम सजा देता|'
'हम गरीबों की कोई नहीं सुनता, सरकार! बच्चे आये थे कचहरी में| मैंने सब कुछ कहा पर किसी ने नहीं सुना|' राही ने कहा|
'अब तेरे बाचे किसके पास हैं? उनका बाप है?' अनीता ने पूछा|
'जेल में उसे मारा था और वहीँ अस्पताल में मर गया| अब बच्चों का कोई नहीं है|'
'तो तेरे बच्चो का बाप भी जेल ही में मारा| वह क्यों जेल आया था?' अनीता ने प्रश्न किया|
'उसे बिना कसूर के ही पकड़ लिया था सरकार! राही ने कहा-ताड़ी पीने गया था| दो चार दोस्त-भाई उसके थे|मेरे घरवाले का एक वक्त पुलिस वाले से झगड़ा हो गया था, उसी का बदला उसने लिया| 109 में उसका चालान करके साल भर की सजा दिलवा दी| वहीँ पर वह मर गया|'
अनीता ने एक दीर्घ निःस्वास के साथ कहा-'अच्छा जा अपना काम कर|' रही चली गई|
अनीता सत्याग्रह करके जेल आई थी| पहले उसे 'बी' क्लास दिया था| फिर उसके घरवालों ने लिखा-पढ़ी करके उसे 'ए' क्लास दिलवा दिया|
अनीता के सामने एक प्रश्न था| वह सोच रही थी कि देश की दरिद्रता और इन निरीह गरीबों के कष्टों को दूर करने का कोई उपाय नहीं है? हम सभी परमात्मा के संतान हैं| एक ही देश के निवासी| कम-से-कम हम सबको खाने पहिनने का तो समान अधिकार तो है ही? फिर यह क्या बात कि कुछ लोग तो बहुत आराम से रहते हैं और कुछ लोग पेट के अन्न के लिए चोरी करते हैं? उसके बाद विचारक की अदूरदर्शिता के कारण या सरकारी वकील के चातुर्यपूर्ण जिरह के कारण छोटे-छोटे बच्चों की माताएं जेल भेज दी जाती हैं| उनके बच्चे भूखो मरने के लिए छोड़ दिए जाते हैं| एक ओर तो यह कैदी हैं, जो जेल आकर सचमुच जेल जीवन की कष्ट उठती हैं और दूसरी ओर हैं हम लोग जो अपनी देशभक्ति और त्याग का ढिंढोरा पिटते हुए जेल आते हैं| हमें आम तौर से दूसरे कैदियों के मुकाबले में अच्छा बर्ताव मिलता है| फिर भी हमें

संतोष नहीं होता| हम जेल आकर 'ए' और 'बी' क्लास के लिए झगड़ते हैं| जेल आकर ही हम कौन-सा बड़ा त्याग कर देते हैं? जेल में हमें कौन सा कष्ट रहता है? सिवा इसके कि हमारे माथे पर नेतृत्व की सील लग जाती है| हम बड़े अभिमान से कहते हैं- 'यह हमारी चौथी जेल यात्रा है', 'यह हमारी पांचवी जेल यात्रा है' और अपनी जेल यात्रा के किस्से बार-बार सुना-सुना कर आत्म गौरव का अनुभव करते हैं, तात्पर्य है कि हम जितनी बार जेल जा चुके होते हैं उतनी ही सीढी हम देशभक्ति और त्याग से दूसरों से ऊपर उठाते जाते हैं और इसके बल पर जेल से छूटने के बाद, कांग्रेस की राजकीय सत्ता मिलते ही, हम मिनिस्टर, स्थानीय संस्थाओं के मेम्बर और क्या-क्या हो जाते हैं|

अनीता सोच रही थी कल तक जो खद्दर भी न पहनते थे, बात-बात पर कांग्रेस का मजाक उड़ाते थे, कांग्रेस के हाथों में थोड़ी शक्ति आते ही वे कांग्रेस भक्त बन गए| खद्दर पहनने लगे| यहाँ तक कि जेल में भी दिखाई पड़ने लगे| वास्तव में यह देशभक्ति है या सत्ताभक्ति!

अनीता के विचारों का तांता लगा हुआ था| वह दार्शनिक हो रही थी| उसे अनुभव हुआ जैसे कोई भीतर ही भीतर उसे काट रहा हो| अनीता की विचारवाली अनीता को ही खाए जा रही थी| उसे बार-बार यह लग रहा था कि उसकी देशभक्ति सच्ची देशभक्ति नहीं वरन उसका मजाक है| उसे आत्मग्लानी हुई और साथ ही साथ अत्मानुभूति भी|

अनीता की आत्मा बोल उठी- वास्तव में सच्ची देशभक्ति तो इन गरीबों के कष्ट निवारण में है| यह कोई दूसरे नहीं, हमारे ही भारतमाता की संतानें हैं| इन हजारों, लाखों भूखे-नंगे भाई-बहनों की यदि हम कुछ भी सेवा कर सके, थोडा भी कष्ट निवारण कर सके तो सचमुच हमने अपने देश की कुछ सेवा की| हमारा वास्तविक देश तो देहात में ही है| किसानों की दुर्दशा से हम सभी थोड़े-बहुत परिचित हैं, पर इन गरीबों के पास ना घर है, ना द्वार| अशिक्षा और अज्ञान का इतना गहरा पर्दा इनकी आँखों पर है कि होश अम्भालते ही माता पुत्री को और सास बहू को चोरी की शिक्षा देती है| और उनका अह विश्वास है कि चोरी करना और भीख मांगना ही उनका काम है| इससे अच्छा जीवन बिताने की वह कल्पना ही नहीं कर सकते| आज यहाँ डेरा डाल कर रहे तो कल दूसरी जगह चोरी की| बचे तो बचे, नहीं तो फिर साल दो साल के लिए जेल| क्या मानव जीवन का यही लक्ष्य है? लक्ष्य है भी या नहीं? यदि नहीं है तो विचारादर्श को उच्च सतह पर टिके हुए हमारे जननायकों और युगपुरुषों की हमें क्या आवश्यकता? इतिहास, धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान का कोई अर्थ नहीं होता? पर जीवन का लक्ष्य है, अवश्य है| संसार की मृगमरीचिका में हम लक्ष्य को भूल जाते हैं| सतह के ऊपर तक पहुँच पाने वाली कुछेक महान आत्माओं को छोड़ कर सारा जन समुदाय संसार में अपने को खोया हुआ पाता है, कर्तव्याकर्तव्य का उसे ध्यान नहीं, सत्यासत्य की समझ नहीं, अन्यथा मानवता से बढ़कर कौन-सा मानव धर्म है? पतित मानवता को जीवन दान देने की अपेक्षा भी कोई महत्तर पुण्य है? राही जैसी भोली-भाली किन्तु गुमराह आत्माओं के कल्याण की साधना जीवन की साधना होनी चाहिए| सत्याग्रही की यही प्रथम प्रतिज्ञा क्यों ना हो? देशभक्ति का यही मापदंड क्यों ना बने?अनीता दिनभर इन्हीं विचारों में डूबी रही| शाम को भी वह इसी प्रकार कुछ सोचते-सोचते सो गयी|

रात को उसने सपना देखा कि जेल से छूटकर बाहर इन्हीं मांगरोरी लोगों के गाँव में पहुँच गई है|वहां उसने एक छोटा-सा आश्रम खोल दिया है| उसी आश्रम में एक तरफ छोटे बच्चे पढ़ते हैं और स्त्रियाँ सूत कातती हैं| दूसरी तरफ मर्द कपड़ा बुनते हैं और रुई धुनकते हैं| शाम को रोज उन्हें धार्मिक पुस्तकें पढ़ कर सुनाई जाती हैं और देश में कहाँ क्या हो रहा है यह सरल भाषा में समझाया जाता है| वही भीख मांगने और चोरी करने वाले आदर्श ग्रामवासी हो चले हैं| रहने के लिए उन्होंने छोटे-छोटे घर बना लिए हैं| राही के अनाथ बच्चों को अनीता अपने साथ रखने लगी है| अनीता यही सुख स्वप्न देख रही थी| रात में वह देर से सोई थी| सुबह सात बजे तक उसकी नींद न खुल पाई| अचानक स्त्री जेलर ने उसे आकर जगा दिया और बोली आप घर जाने को तैयार हो जाइये| आपके पिताजी बीमार हैं| आप बिना शर्त छोड़ी जा रही हैं| अनीता अपने स्वप्न को सच्चाई में परिवर्तित करने की एक मधुर कल्पना लेकर घर चली गई|